माध्यमिक शिक्षकों के सम्बन्ध मे सुझाव :-

आयोग ने माध्यमिक शिक्षकों के सम्बन्ध में जो सुझाव दिये, उन्हे हम तीन वर्गों मे विभाजित कर सकते है।

(i) **प्रशिक्षण सम्बन्धी सुझाव :-** 1. माध्यमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण महाविद्यालय, विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होने चाहिए। इनमे प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता स्नातक होनी चाहिए।

2\. एम. एड. मे उन्हे ही प्रवेश दिया जाये, जो स्नातक प्रशिक्षण (बी. एड.) उत्तीर्ण हो और जिन्हे कम से कम 3 वर्ष का शिक्षण अनुभव हो।

3\. शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों और महाविद्यालयों में प्रशिक्षार्थियों से किसी प्रकार का शुल्क न ली जाये और उन्हे राज्य सरकार की ओर से छात्रवृत्तियां दी जाये।

4\. शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों मे सिद्धांत और प्रायोगिक परीक्षण को बराबर का महत्व दिया जाये।

(ii) **नियुक्ति सम्बन्धी सुझाव :-**

1\. शिक्षकों के चयन सम्बन्धी नियम सामान्य बनाये जाये।

2\. प्रत्येक गैर सरकारी स्कूल मे शिक्षको की नियुक्ति हेतु चयन समिति का गठन किया जाये।

(iii) **शिक्षकों के वेतनमान एवं सेवा शर्तों सम्बन्धी सुझाव :-**

1\. सामान योग्यता और सामान कार्य करने वाले शिक्षकों के वेतन समान हो, चाहे वे किसी भी प्रकार के विद्यालयों मे कार्यरत हो।

2\. प्रधानाचार्यों को उच्च वेतन मान दिया जाये।

3\. शिक्षकों को प्राइवेट ट्यूशन की स्वीकृति न दी जाये।

4\. योग्य एवं स्वस्थ शिक्षकों को 58 वर्ष के स्थान पर 60 वर्ष की आयु पर सेवा निवृत्ति दी जाये।

A Quality Product from Chitra

छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सुझाव :-

1. सभी प्रान्तो में स्कूल स्वास्थ्य सेवा योजना शुरू की जाये।
2. छात्रों के सामान्य रोगों का निःशुल्क उपचार किया जाये।
3. अस्वस्थ छात्रों का वर्ष में कई बार स्वास्थ्य परीक्षण किया जाये।
4. छात्रावासों में पौस्टिक भोजन की व्यवस्था की जाये।

माध्यमिक विद्यालयों के सम्बन्ध मे सुझाव :-

1. प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय मे उचित भवन, फर्नीचर एवं अन्य सामग्री होनी चाहिए।
2. प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में पौस्टिक मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था की जाये।
3. प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में सत्र मे कम से कम 200 कार्य दिवस हो।
4. प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय मे 2 माह का ग्रष्मावकाश तथा 10-10 दिन के दो लघु अवकाश और सभी सरकारी अवकाश हो।

शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन एवं परामर्श सम्बन्धी सुझाव :-

1. प्रत्येक राज्य में एक शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन ब्यूरो की स्थापना की जाय
2. मार्गदर्शन और परामर्श देते समय छात्रों की परिस्थितियों और क्षेत्रीय आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाये।
3. प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय मे शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
4. एवं परामर्श सेवा की व्यवस्था की जाय।

मार्गदर्शन छात्रों के व्यक्तिगत भेदों, रुचि, सामर्थ्य और योग्यता के आधार पर किया जाये।

माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के परीक्षा सम्बन्धी सुझाव :-

निबंधात्मक परीक्षाओं में सुधार की जाये तथा विचार प्रधान प्रश्न पूछे जायें।

परीक्षाओं को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं का

A Quality Product from Chitra

का भी प्रयोग किया जाये इतिहास के लिए

3. वाह्य परीक्षाओं का आयोजन कम किया जाये। यह केवल माध्यमिक शिक्षा के समाप्ति पर ही हो।

4. वाह्य परीक्षा में किसी एक विषय में अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए समविभागीय [Supplementary] परीक्षा की व्यवस्था की जाये।

5. मूल्यांकन परिणाम प्रतिशत अंकों में प्रकट न करके ग्रेडों में प्रकट किया जायें।

माध्यमिक स्तर की व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी सुझाव:-

1. माध्यमिक स्कूलों को बहुउद्देश्य स्कूलों में बदला जाये।
2. माध्यमिक स्कूलों में किसी एक हस्तकार्य की शिक्षा अनिवार्य की जायें।
3. बड़े शहरों में पॉलीटेक्निक कालेज स्थापित किये जायें।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में सुझाव:-

1. बालकों की तरह बालिकाओं को भी किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार हो।
2. बालिकाओं के लिए गृह विज्ञान के अध्ययन की व्यवस्था की जाये।
3. आवश्यकतानुसार बालिका विद्यालय खोले जायें।
4. जहां बालिका विद्यालय खोलना सम्भव न हो वहां सह शिक्षा की स्वीकृति दी जायें।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा सम्बन्धी सुझाव:-

1. माध्यमिक विद्यालय में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को अनिवार्य न किया जाये।
2. अभिभावकों की स्वीकृति के आधार पर इसकी व्यवस्था की जा सकती है। पर यह शिक्षा स्कूल कार्य प्रारम्भ होने से

पहले अथवा उसके समाप्त होने के बाद।

मूल्यांकन :- गुण -

1. नारी शिक्षा के विषय में ठोस सुझाव दिये।
2. शिक्षकों की दशा में सुधार के उपाय बताये।
3. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बनाने पर बल दिया।
4. शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन पर बल।
5. परीक्षा प्रणाली में सुधार के सुझाव।
6. चरित्र निर्माण एवं अनुशासन पर बल दिया।
7. शिक्षा के उपयुक्त उद्देश्य निर्धारित किये।
8. माध्यमिक शिक्षा के संरचना को व्यवस्थित किया।

दोष :-

1. पाठ्यक्रम बेमिसाल था।
2. माध्यमिक शिक्षा का संगठन अस्पष्ट था।
3. पाठ्यक्रम में अत्यधिक भिन्नता के कारण चयन में कठिनाई थी।
4. गैर सरकारी विद्यालयों के बारे में सुझाव पहुँच से परे थे।
5. बहुउद्देश्यीय स्कूलों का सुझाव निरर्थक था।
6. धार्मिक और नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में अनुपयुक्त सुझाव दिया गया था।

A Quality Product from Chitra